

गुरु नानक – सबद ४९  
पवण गुरु पाणी पिता माता धरत महत ॥  
जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८

सलोक ॥

पवण गुरु पाणी पिता माता धरत महत ॥  
दिवस रात दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगत ॥  
चंगि आईआ बुरि आईआ वाचै धरम हदूर ॥  
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूर ॥  
जिनी नाम धिआइआ गए मसकत घाल ॥  
नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल ॥ १ ॥

सारः: सृष्टि का प्रत्येक तत्व आपस में गुँथा हुआ है; इसलिए, उनका अस्तित्व सामूहिकता में पनपता है। विकासवादी दृष्टिकोण से, रिश्ते हमारे अस्तित्व के मूल में हैं। हमारा अस्तित्व दो व्यक्तियों के प्रजनन के संबंध पर आधारित है, उनकी संतान केवल प्रकृति में सृजन के अन्य रूपों के समर्थन से ही क्रायम रह सकती है। यह आपसी संबंध हर तत्व के प्रति सम्मान और ज़िम्मेदारी की मांग करता है, न केवल एक नैतिक कर्तव्य के रूप में, बल्कि जिस दुनिया में हम रहते हैं उसे बनाए रखने के साधन के रूप में भी। उदाहरण के तौर पर जैसे इस सलोक में, हवा जो हमारे भौतिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है, को गुरु के बराबर माना गया है। जो हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। जीवन को क्रायम रखने वाले पानी की तुलना जीवन प्रदान करने वाले पिता से की गई है। इसी तरह, जैसे पृथ्वी पोषण प्रदान करती है, उसकी तुलना पोषण करने वाली माँ के गर्भ से की गई है।

सलोक ॥

सलोक ॥

पवण गुरु पाणी पिता माता धरत महत ॥

आध्यात्मिक जीवन को सुविधाजनक बनाने वाले गुरु के रूप में हवा का, जीवन प्रदान करने वाले पिता के रूप में पानी का और जीवन का पोषण करने वाली माँ के रूप में पृथ्वी का सम्मान करें।

दिवस रात दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगत ॥

मर्दाना और स्त्री गुणों के आदान-प्रदान का सम्मान करें, ये दो पोषणकारी शक्तियां, जो सामूहिक रूप से दिन से रात में समय के संचालन का समर्थन करती हैं।

चंगि आईआ बुरि आईआ वाचै धरम हदूर ॥

नैतिक कर्तव्य के रूप में व्यक्ति की चेतना में सकारात्मक काम और नकारात्मक काम का मूल्यांकन किया जाता है।

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूर ॥

अपने करम के कारण से, कुछ लोग दिव्यता के करीब हो जाते हैं और कुछ दूर हो जाते हैं।

जिनी नाम धिआइआ गए मसकत घाल ॥

जिन लोगों ने ज्ञान की बातों पर विचार किया है, उनकी दृढ़ता ने आध्यात्मिक प्रगति का अभिनंदन किया है।

नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल ॥ १॥

नानक कहते हैं कि ऐसे व्यक्तित्व प्रबुद्ध हैं, और उनकी संगत में कई लोग मुक्त हो चुके हैं। (१)

तत्त्वः गुरु नानक के प्रबुद्ध शब्द हमारी आध्यात्मिक यात्रा के लिए हमारी पसंद और करमों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वह कहते हैं कि सृष्टि का हर पहलू आपस में जुड़ा हुआ है, और हमारा व्यवहार सामाजिक अनुभूति से प्रभावित होता है, जो या तो प्रगतिशील या प्रतिगामी हो सकता

है। अपने करमों पर चिंतन करके और स्वयं को प्रबुद्ध व्यक्तियों के साथ जोड़कर हम अपना व्यक्तिगत विकास कर आध्यात्मिक मुक्ति की ओर बढ़ सकते हैं।

---

पहलकदमी

**Oneness In Diversity Research Foundation**

वेबसाइट: [OnenessInDiversity.com](http://OnenessInDiversity.com)

ईमेल: [onenessindiversityfoundation@gmail.com](mailto:onenessindiversityfoundation@gmail.com)